चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	2-6-26	4	3-4

हिसार। स्ट्रॉबेरी पर शोध करने वाले वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज।

एचएयू के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के नए विल्ट रोगकारक को पहचाना

अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल में विल्ट रोग के नए रोगकारक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की है। विश्वविद्यालय के अनुसार भारत में स्ट्रॉबेरी के विल्ट से जुड़े इस रोगजनक की यह पहली पुष्टि है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देश पर रोग प्रबंधन का काम शुरू किया गया है।

उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों के द्वारा प्रयोगशाला में फफूंदनाशी एवं बायोएजेंटस का मूल्यांकन इस रोग के प्रबंध के लिए कर लिया गया है और प्रभावी फफूंदनाशी एवं बायोएजेंटस का प्रयोग आने वाले मौसम में प्रक्षेत्र पर इसका ट्रायल किया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने बीमारी को मान्यता दी है।

आगामी मौसम में खेत परीक्षण किया जाएगा : डॉ. आदेश कुमार

मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश कुमार के अनुसार प्रयोगशाला स्तर मूल्यांकन हो चुका है, आगामी मौसम में खेत परीक्षण किया जाएगा। वैज्ञानिक अनिल कुमार सैनी, रूमी रावल, राकेश कुमार, के.सी. राजेश कुमार, सुशील शर्मा, विकास कुमार शर्मा, योगेश कुमार, आर.पी.एस. दलाल, प्रिंस, इंदु अरोड़ा, राकेश गहलोत, पीएचडी छात्र शुभम सैनी का भी शोधकार्य में योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	2.6.26	3	3-8

उपलब्धि

फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की देश में पहली पुष्टि, अंतरराष्ट्रीय जर्नल में शोध को मिली मान्यता

एचएयू ने की स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग के नए रोगजनक की पहचान

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल के लिए घातक विल्ट रोग के नए रोगजनक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की है। भारत में पहली बार स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग से जुड़े इस रोगजनक की पुष्टि हुई है।

इस शोध को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है और इसके प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय ने कार्य शुरू कर दिया है। प्रयोगशाला स्तर पर फफूंदीनाशियों और बायोएजेंट्स का मूल्यांकन पूरा कर लिया गया है। अब प्रभावी फफूंदीनाशियों और बायोएजेंट्स का आगामी सीजन में खेतों में परीक्षण किया जाएगा।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में उभरती बीमारियों की समय पर पहचान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने रोग के प्रकोप पर सतत निगरानी और नियंत्रण उपायों को तेजी से लागू करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि स्ट्रॉबेरी की खेती में विल्ट रोग एक गंभीर चुनौती बनकर उभरा है जिससे फसल उत्पादन प्रभावित हो सकता है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज वैज्ञानिकों के साथ। स्रोत : संस्थान

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि 3.3 इंपैक्ट फैक्टर वाली डच प्रकाशन संस्था एल्सेवियर के प्रतिष्ठित जर्नल फिजियोलॉजिकल एंड मॉलिक्यूलर प्लांट पैथोलॉजी ने इस शोध को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। यह जर्नल पौध रोग विज्ञान के क्षेत्र में विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित माना जाता है।

उन्होंने बताया कि एचएयू के वैज्ञानिक देश में इस रोगजनक की पहचान करने वाले पहले वैज्ञानिक हैं। विल्ट रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश कुमार ने बताया कि शोध दल रोग के प्रसार को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए प्रभावी प्रबंधन तकनीकों के विकास पर कार्य कर रहा है।

इस शोध में वैज्ञानिक अनिल कुमार सैनी, रूमी रावल, राकेश कुमार, केसी. राजेश कुमार, सुशील शर्मा, विकास कुमार शर्मा, योगेश कुमार, आरपीएस दलाल, प्रिंस, इंदु अरोड़ा, राकेश गहलोत तथा पीएचडी छात्र शुभम सैनी का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

स्ट्रॉबेरी उत्पादन का प्रमुख केंद्र है स्याहड़वा

हिसार का गांव स्याहड़वा स्ट्रॉबेरी उत्पादन के प्रमुख केंद्र के रूप में पहचान रखता है। पिछले करीब दो दशकों से गांव और आसपास के क्षेत्रों में स्ट्रॉबेरी की खेती की जा रही है। वर्तमान में 100 एकड़ से अधिक क्षेत्र में किसान इसकी खेती कर रहे हैं और लाखों रुपये की आय अर्जित कर रहे हैं। हिसार की स्ट्रॉबेरी देश के विभिन्न हिस्सों में भेजी जाती है तथा इसकी मांग लगातार बढ़ रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	2-6-26	5	7-8

स्ट्रॉबेरी में नए विल्ट रोगजनक की पहचान, एचएयू को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान

हिसार में एचएयू के कुलपति स्ट्रॉबेरी विल्ट रोग की पहचान करने वाले वैज्ञानिकों के साथ। -हप्र

हिसार, 1 जून (हप्र)

- फसल बचाव के लिए रोग नियंत्रण रणनीति पर काम शुरू, प्रतिष्ठित जर्नल में प्रकाशित होगा शोध

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल में विल्ट (मुरझाने) रोग के नए रोगजनक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहली बार पहचान कर कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। भारत में स्ट्रॉबेरी में इस रोगजनक की पुष्टि का यह पहला मामला माना जा रहा है। एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में फसलों पर उभर रहे नए रोगों की समय रहते पहचान बेहद जरूरी है। उन्होंने रोग के प्रसार पर निगरानी रखने और इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए तेजी से कार्य करने के निर्देश दिए। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि इस शोध को अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संस्था एल्सेवियर के प्रतिष्ठित जर्नल फिजियोलॉजिकल एंड मॉलिक्यूलर प्लांट पैथोलॉजी ने प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश के अनुसार वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला स्तर पर विभिन्न फफूंदनाशकों और जैव-एजेंट्स का परीक्षण पूरा कर लिया है। आगामी मौसम में इन उपायों का खेतों में परीक्षण किया जाएगा। शोध दल अब रोग के प्रसार, प्रभाव और नियंत्रण की रणनीतियों पर विस्तृत अध्ययन कर रहा है। यह उपलब्धि स्ट्रॉबेरी उत्पादकों को राहत देने के साथ बागवानी फसलों की सुरक्षा को भी मजबूत करेगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	2-6-26	3	6-8

हकृवि के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल के लिए घातक विल्ट रोग फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की

हिसार, 1 जून (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल के लिए घातक विल्ट रोग के एक नए रोग कारक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की है। यह पहली बार है जब भारत में स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग से संबंधित इस नए रोगजनक की पुष्टि की गई है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया हैं। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों के द्वारा प्रयोगशाला में फफूंदीनासी एवं बायोएजेंटस का मूल्यांकन इस रोग के प्रबंध के लिए कर लिया गया है और प्रभावी फफूंदीनासी एवं बायोएजेंटस का प्रयोग आने वाले मौसम में प्रक्षेत्र पर इसका ट्रायल किया जाएगा। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ।

हकृवि के लपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी और प्रक्षेत्र पर रोग नियंत्रण के लिए तेजी से काम शुरू करने की आवश्यकता पर बल दिया। स्ट्रॉबेरी की सफल खेती अक्सर विभिन्न जैविक कारकों से बाधित होती है जिनमें से विल्ट रोग बड़ी चिंता का विषय है। यह खोज स्ट्रॉबेरी की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसका इंपैक्ट फैक्टर 3-3 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है।

इसमें प्रकाशित फिजियोलोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन हेतु स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषत: पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

विल्ट रोग के मुख्य शोधकर्ता डा. आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। एचएयू के वैज्ञानिकों अनिल कुमार सैनी, रूमी रावल, राकेश कुमार, के.सी. राजेश कुमार, सुशील शर्मा, विकास कुमार शर्मा, योगेश कुमार, आर.पी.एस. दलाल, प्रिंस, इंदु अरोड़ा, राकेश गहलोत व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	2-6-26	9	1-6

अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता

एचएयू ने पहली बार की स्ट्रॉबेरी विल्ट बीमारी की पहचान

आने वाले मौसम में प्रक्षेत्र पर किया जाएगा प्रभावी फफूंदीनाशी व बायोएजेंट्स के प्रयोग का ट्रायल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

एचएयू के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल के लिए घातक विल्ट रोग के एक नए रोग कारक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की है। यह पहली बार है जब भारत में स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग से संबंधित इस नए रोगजनक की पुष्टि की गई है। वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया हैं। वैज्ञानिकों के द्वारा प्रयोगशाला में फफूंदीनासी एवं बायोएजेंटस का मूल्यांकन इस रोग के प्रबंध के लिए कर लिया गया है और प्रभावी फफूंदीनासी एवं बायोएजेंटस का प्रयोग आने वाले मौसम में प्रक्षेत्र पर इसका ट्रायल किया जाएगा।

वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसका इंपैक्ट फैक्टर 3.3 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन के लिए स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषतः पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाले, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। यह शैक्षणिक संस्था विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हकृवि के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

विल्ट रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। एचएयू के वैज्ञानिकों अनिल कुमार सैनी, रूमी रावल, राकेश कुमार, केसी राजेश कुमार, सुशील शर्मा, विकास कुमार शर्मा, योगेश कुमार, आरपीएस दलाल, प्रिंस, इंदु अरोड़ा, राकेश गहलोत व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

निगरानी व मजबूत प्रबंधन जरूरी: कुलपति

बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभर रहे खतरों की समय पर पहचान एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य है। वैज्ञानिकों को बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी और प्रक्षेत्र पर रोग नियंत्रण के लिए तेजी से काम शुरू करने की आवश्यकता है। स्ट्रॉबेरी की सफल खेती अक्सर विभिन्न जैविक कारकों से बाधित होती है जिनमें से विल्ट रोग बड़ी चिंता का विषय है। यह खोज स्ट्रॉबेरी की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

-प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, हकृवि।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	2-6-26	9	6-8

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार की स्ट्रॉबेरी विल्ट बीमारी की पहचान

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता

हिसार, 1 जून (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल के लिए घातक विल्ट रोग के एक नए रोग कारक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की है। यह पहली बार है जब भारत में स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग से संबंधित इस नए रोगजनक की पुष्टि की गई है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया हैं। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों के द्वारा प्रयोगशाला में फफूंदीनासी एवं बायोएजेंटस का मूल्यांकन इस रोग के प्रबंध के लिए कर लिया गया है और प्रभावी फफूंदीनासी एवं बायोएजेंटस का प्रयोग आने वाले मौसम में प्रक्षेत्र पर इसका ट्रायल किया जाएगा। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभर रहे खतरों की समय पर पहचान एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी और प्रक्षेत्र पर रोग नियंत्रण के लिए तेजी से काम शुरू करने की आवश्यकता पर बल दिया। स्ट्रॉबेरी की सफल खेती अक्सर विभिन्न जैविक कारकों से बाधित होती है जिनमें से विल्ट रोग बड़ी चिंता का विषय है। यह खोज स्ट्रॉबेरी की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसका इंपैक्ट फैक्टर 3.3 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन हेतु स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषत: पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। यह शैक्षणिक संस्था विशेषत: पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। विल्ट रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	01.06.2026	--	--

एचएयू वैज्ञानिकों ने पहली बार की स्ट्रॉबेरी विल्ट बीमारी की पहचान

अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल के लिए घातक विल्ट रोग के एक नए रोग कारक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की है। यह पहली बार है जब भारत में स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग से संबंधित इस नए रोगजनक की पुष्टि की गई है। विल्ट रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। एचएयू के वैज्ञानिकों अनिल कुमार सैनी, रूमी रावल, राकेश कुमार, के.सी. राजेश कुमार, सुशील शर्मा, विकास कुमार शर्मा, योगेश कुमार, आर.पी.एस. दलाल, प्रिंस, इंदु अरोड़ा, राकेश गहलोत व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

कुलपति ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभर रहे खतरों की समय पर पहचान एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी और प्रक्षेत्र पर रोग नियंत्रण के लिए तेजी से काम शुरू करने की आवश्यकता पर बल दिया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसका इंपैक्ट फैक्टर 3.3 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन हेतु स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषतः पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	01.06.2026	--	--

हकृवि वैज्ञानिकों ने देश में पहली बार की स्ट्रॉबेरी विल्ट बीमारी की पहचान

नभ-छोर न्यूज ▸▸ 01 जून

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फसल के लिए घातक विल्ट रोग के एक नए रोग कारक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की है। यह पहली बार है जब भारत में स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग से संबंधित इस नए रोगजनक की पुष्टि की गई है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों के द्वारा प्रयोगशाला में फफूंदीनासी एवं बायोएजेंट्स का मूल्यांकन इस रोग के प्रबंध के लिए कर लिया गया है और प्रभावी फफूंदीनासी एवं बायोएजेंट्स का प्रयोग आने वाले मौसम में प्रक्षेत्र पर इसका ट्रायल किया जाएगा। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे। कुलपति प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि स्ट्रॉबेरी की सफल खेती अक्सर विभिन्न जैविक कारकों से बाधित होती है जिनमें से विल्ट रोग बड़ी चिंता का विषय है। यह खोज स्ट्रॉबेरी की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।

अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसका इंपैक्ट फैक्टर 3.3 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन हेतु स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषतः पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। यह शैक्षणिक संस्था विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के विल्ट रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

विल्ट रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। एचएयू के वैज्ञानिकों अनिल कुमार सैनी, रूमी रावल, राकेश कुमार, केसी राजेश कुमार, सुशील शर्मा, विकास कुमार शर्मा, योगेश कुमार, आरपीएस दलाल, प्रिंस, इंदु अरोड़ा, राकेश गहलोत व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	2-6-26	4	2-5

दैनिक जागरण

स्ट्राबेरी पर 'विल्ट' का खतरा, एचएयू ने की पहचान

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि (एचएयू) के विज्ञानियों ने स्ट्राबेरी फसल में फैलने वाले नए रोग विल्ट के कारक फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम की पहचान की है। देश में पहली बार इस रोगजनक की पुष्टि होने के बाद एचएयू के शोध को अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नल ने भी मान्यता दी है। हिसार स्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि बदलते कृषि परिदृश्य में नई बीमारियों की समय रहते पहचान बेहद जरूरी है। विज्ञानियों ने रोग नियंत्रण के लिए फफूंदीनाशी और बायोएजेंट का प्रयोगशाला परीक्षण पूरा कर लिया है और अब खेत स्तर पर ट्रायल की तैयारी की जा रही है। विश्वविद्यालय का मानना है कि यह खोज स्ट्राबेरी उत्पादन को बड़े नुकसान से बचाने में अहम साबित हो सकती है।

स्ट्राबेरी उत्पादन पर बढ़ रहा खतरा : विज्ञानियों के अनुसार विल्ट रोग स्ट्राबेरी फसल के लिए बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। यह बीमारी पौधों को मुरझाकर उत्पादन क्षमता घटा देती है। मुख्य शोधकर्ता डा. आदेश कुमार ने बताया कि रोग के प्रभाव को कम करने और प्रबंधन रणनीति विकसित करने पर तेजी से काम किया जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय जर्नल ने स्वीकार की शोध रिपोर्ट : अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि एचएयू की शोध रिपोर्ट को अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रकाशन संस्था एल्सेवियर के जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया गया है। विश्वविद्यालय के विज्ञानी देश में इस बीमारी की पहचान करने वाले पहले शोधकर्ता बने हैं।

- एचएयू के विज्ञानियों ने पहली बार फ्यूजेरियम प्रोलिफेरेटम रोग कारक की पहचान की, अब नियंत्रण रणनीति पर काम शुरू
- बीमारी पकड़ी, एचएयू के शोध को अंतरराष्ट्रीय मान्यता, हिसार के विश्वविद्यालय के शोध को मिली अंतरराष्ट्रीय मान्यता

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिकों के साथ मौजूद • पीआरओ

जानें... क्या है विल्ट रोग

विल्ट रोग फफूंदजनित संक्रमण है, जिसमें पौधे धीरे-धीरे मुरझाने लगते हैं। इससे जड़ों और तनों पर असर पड़ता है तथा उत्पादन क्षमता घट जाती है। समय पर पहचान और नियंत्रण नहीं होने पर पूरी फसल प्रभावित हो सकती है।

"नई बीमारियों की समय पर पहचान और नियंत्रण रणनीति विकसित करना बदलते कृषि परिदृश्य में बेहद आवश्यक है।"

प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, एचएयू